यशोधरा राठौर

निसार हुई दुनिया

अब तो
मखमल के पैबन्द
लगेंगे टाटों पर

अब
धरती से आसमान तक
एक कहानी है
मिला उसे ही ओहदा
उतरा जिसका
पानी है
नाव
हमेशा डूब रही है
आकर घाटों पर

आम रोपने पर
बबूल के
जंगल हमें मिले
पत्थर के ऊपर
गुलाब के
दीखे फूल खिले
और
निसार हुई दुनिया
बेरों के कांटों पर

आंखें
आज नहीं आंखों की
भाषा पढ़ पातीं
उम्मीदों के
मानचित्र का चेहरा
गढ़ पातीं
मगर बोलियां
टंगी हुई हैं
अब भी डांटों पर।

घना अंधेरा

इतना घना अंधेरा
पहले कभी न था

आज हवा लगती है
ज्यादा गुमसाई
सांसे लेने में
होती है कठिनाई
कांटों का यह
घेरा पहले कभी न था

नदी नदी जैसी
जंगल जंगल से थे
आसमान में बादल भी
बादल से थे यह शैतानी
फेरा पहले कभी न था

कभी–कभी दिख जाती
थीं रोशनियां भी
नागफनी के कांटों सी
दुनिया भी थी
दुबका हुआ
सवेरा पहले कभी न था।

सम्पर्क–
द्वारा–पवन कुंवर, प्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया
पुराना जीरो माईल चौक
एस.के.एम.सी.एच. रोड, शहबाजपुर
मुजफ्फरनगर–842003
मो.–09334905501